(2) बांधिनथी

प्रातः क्लास 13-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों से पूछते हैं तुम क्या कर रहे हो? रूहानी बच्चे कहेंगे बाबा हम जो सतोप्रधान थे सो तमोप्रधान बने हैं फिर बाबा आप के श्रीमत अनुसार हमको सतोप्रधान जरूर बनना है। अभी बाबा आप ने रास्ता बताया है। यह कोई नई बात नहीं। पुरानी तो पुरानी बात है। सभी से पुरानी है याद की यात्रा। जो जो करेंगे। इसमें शो की बात नहीं। हरेक अपने अन्दर से पूछे हम कहां तक बाप को याद करते हैं। कहां तक सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। सतोप्रधान बनेंगे तब जब पिछाड़ी में अन्त आयेगा। उसका भी साक्षात होता रहेगा। कोई जो कुछ भी करता है सो अपने लिये ही करता है। बाप पर कोई मुहर नहीं लगता है। बाप मदद करते हैं तो बच्चों को डायरेक्शन देते हैं उनके ही कल्याण अर्थ। बाप तो है ही कल्याणकारी। कई बच्चे उल्टी ज्ञान में भी आ जाते हैं। ऐसे बाबा को फील करते हैं। बहुत मगरूरी रहती है। देह-अभिमानी मगरूरी होते हैं। देहीअभिमानी बड़े शान्त रहेंगे। उनको कब उल्टी सुल्टी ख्याल नहीं आते। बाप तो हर प्रकार से पुरुषार्थ कराते रहते हैं। माया भी बड़ी जबरदस्त है। अच्छे2 बच्चों को भी वार कर लेती है। इसलिये ब्राह्मणों का माला नहीं बन सकता। आज बहुत अच्छी रीत याद करते हैं, कल देह के अहंकार में ऐसे आ जाते हैं जैसे सान्डे। सान्डे को अहंकार बहुत होता है। इसमें एक कहावत भी कहते हैं सर मंडल के साज से सान्डे देह-अभिमानी क्या जाने। देह-अभिमान बहुत ही खोटा है। बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे सान्डे तो बाप के आगे भी गुर गुर करते रहते हैं। ऐसे फीलिंग आती है। बहुत देहअभिमानी सान्डे हैं। शिव बाबा तो कहते हैं आई एम मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट। ऐसे नहीं अपन कहना है सर्वेन्ट और नवाबी चलाते रहे। बहुतों का खून बिगड़ता रहता है। अगर कुछ थोड़ा समझाया जाता है तो। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों सतोप्रधान जरूर बनना है। यह तो बहुत सहज बात है। इन में कोईचूं-चां नहीं। मुख से कुछ बोलना नहीं है। कहां भी जाओ अन्दर में याद करना है। ऐसे नहीं यहां बैठे हो तो बाबा मदद करते हैं। बाप तो आये ही हैं मदद करने। बाप को तो यही ख्याल रहता है बच्चे कहां कोई गफलत न करे। माया यहां ही घूसर मार देती है। देह-अभिमान बहुत2 खराब है। देहाभिमान में आने से ही बिल्कुल आकर पटपड़े हैं। बाबा कहते हैं यहां आकर बैठे तो भी मोस्ट बिलवेड बाप को याद करो। बाप कहते हैं मैं ही पतित-पावन हूं। मेरे को याद करने से, इस योग-अग्नि से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होंगे। बच्चों की अजब वह अवस्था आई नहीं है जो कोई को भी अच्छी रीत समझा सके। ज्ञान तलवार में भी योग का जौहर चाहिए। नहीं तो तलवार कोई काम के नहीं रहती। मूल बात है ही याद की यात्रा। बहुत बच्चे उल्टी-सुल्टी धंधे में लगे रहते हैं। याद की यात्रा, पढ़ाई करते ही नहीं। ऐसे मत समझो हम सब शिव बाबा के भण्डारे यह मेहनत करते हैं इसलिये इसमें टाईम नहीं मिलता। बाप कहते हैं ऐसी मेहनत नहीं करो। धंधे-धोरी [illegible] अपना पार्ट बजाये दो। अपना भविष्य तो बनाना है ना। पवित्र सतोप्रधान बनना है। इसमें ही बहुत मेहनत है। बहुत बड़े2 लीडर्स, म्युजियम आदि सम्भालने वाले, याद की यात्रा में रहते ही नहीं। बाबा ने समझाया है, याद की यात्रा में गरीब, बांधेलियां जरूरी रहती हैं। घड़ी2 शिव बाबा को याद करती रहती है। शिव बाबा हमारे यह बन्धन खलास करो। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं यह भी गायन है। विष के कारण बहुत मार खाती हैं। बहुत पापात्माएं हैं। कोई2 स्त्रीयां भी ऐसी हैं जो विष के लिये पति को तंग करती है। तो तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना है। सच्चे2 स्टुडन्ट बनो। अच्छे स्टुडन्ट जो होते हैं वह एकान्त में बगीचे में जाकर पढ़ते हैं। तुमको भी बाप कहते हैं भल कहां भी चक्र लगाने जाओ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। याद की यात्रा का शौक रखो। उस धन कमाने की मैं में यह अविनाशी ज्ञान धन तो बहुत ऊंच है। वह विनाशी धन तो फिर भी खाक हो जाना है। बाबा जानते हैं बच्चे पूरी सर्विस नहीं करते हैं। याद में मुश्किल रहते हैं। सच्ची सर्विस जो करनी चाहिए वह करते नहीं बाकी स्थूल सर्विस में ध्यान चला जायेगा। ड्रामा अनुसार होता है परन्तु बाप फिर भी पुरु तो करावेंगे ना। बाप कहते हैं कोई भी काम करो

कपड़े सटते हो बाप को याद करते रहो। याद में ही माया विघ्न डालती है। बाबा ने समझाया है स्तम्भ माया स्तम्भ हो लड़ती है। बाबा अपना भी बताते हैं मैं स्तम्भ हूं, जानता हूं मैं बेगर टु प्रिन्स बनने वाला हूं। तो भी माया सामना करती है। माया किसको भी छोड़ती नहीं। पहलवानों से तो और ही लड़ती है। बहुत बच्चे अपने देहअहंकार में रहते हैं। बाप कितना निरअहंकारी रहते हैं। कहते हैं तुम बच्चों को नचाने वाला सर्वेन्ट हूं। वह तो अपने को बहुत ही ऊंच समझते हैं। यह देहअहंकार सब तोड़ना है। बहुतों में अहंकार का भूत बैठा हुआ है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो बाप को याद करते रहो। यहां तो बहुत अच्छा चान्स है। घूमने-फिरने का भी अच्छा है। फ्रीस्तभी है। भल चक्र लगाओ फिर एक दो से पूछना कितना याद में रहे। और कोई तरफ बुधि तो नहीं गई। यह आपस में समीनार करनी चाहिए। भल फीमेल अलग, मेल्स अलग हों। फीमेल्स अलग हों। मेल्स पिछाड़ी में हो। क्योंकि माताओं की सम्भाल करनी होती है। इसलिये माताओं को आगे रखना है। बहुत अच्छी एकान्त है। सन्यासी कोई चर्चे थोड़े ही हैं तो एकान्त में चले जाते हैं। सतोप्रधान जो सन्यासी थे वह बहुत ही निडर रहते थे। जानवर आदि कोई से भी नहीं डरते थे। उस नशे में रहते थे। अभी तो तमोप्र० बन पड़े हैं। हरेक धर्म जो स्थापन होता है पहले सतोप्रधान होता है फिर रजो तमो में आते हैं। सन्यासी जो सतोप्रधान थे वह ब्रह्म की मस्ती में मस्त रहते थे। उनमें बड़ी कशिश होती थी। जंगल में भोजन मिलता था। दिन प्रति दिन तमोप्रधान होने से ताकत कम होती जाती है। तो बाबा राय देते हैं यहां बच्चों को अपनी उन्नति का चांस बहुत अच्छा है। यहां तो तुम आते ही हो कमाई करने लिये। बाबा से सिर्फ मिलने से कमाई थोड़ी ही होगी। बाप को याद करेंगे तो कमाई होगी। ऐसे मत समझो बाबा आशीर्वाद करेंगे। कुछ भी नहीं। वह साधू लोग आदि आशीर्वाद करते हैं तुमको नीचे गिराने की। तुमको गिरना ही है। अभी बाप कहते हैं तुमको जीन बनकर बुधि का योग उपर लगाओ। जीन की कहानी है ना। घोड़ा हमको काम दो ... बाप भी कहते हैं तुमको डायरेक्शन देता हूं याद में रहे तो बेड़ा पार हो जायेगा तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। यहां तुम आते ही हो इसलिये। मुरली तो आधा पौना घंटा चलती है। बाकी मुख्य बात है ही याद की। जिससे तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। हमको याद की यात्रा से सतोप्रधान जरूर बनना है, माया कितना भी नाचा नाचे हम तो खोट बाप को जरूर याद करेंगे, ऐसे अन्दर में बाप को नोटिस करते, बाप को याद करते रहो। कोई भी मनुष्य को याद करो ही नहीं। बाबा का फोटो मांगते हैं तो बाबा समझते हैं यह बिल्कुल बेसमझ हैं। और तुमको तो शिवबाबा कहते हैं शिवबाबा को याद करो। फिर यह फोटो आदि क्या करेंगे। बाबा समझाते हैं इनमें अज्ञान है। जो फोटो के लिये दिल करते हैं। इनमें तो कोई फायदा नहीं। यह देह तो मिट्टी है। इनका फोटो क्या देखना है। भक्ति-मार्ग के जो रस्म हैं वह ज्ञान मार्ग में हो न सके। कब भी फोटो आदि न लो। हां कहते हो बाबा सब भूलें। तो भी बाप शिक्षा देते हैं याद की यात्रा में तीखा जाना है। मूल बात यह है सतोप्रधान बनना है। बाप की डायरेक्शन चलती है, घूमने-फिरने जाते हो तो भी याद में रहो तो घर भी याद रहेगा, राजाई भी याद रहेगी। ऐसे नहीं याद में बैठे2 गिर पड़ना है। वह तो फिर हठयोग हो जाता। यह तो सीधी बात है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। कई बैठे 2 गिर पड़ते हैं। इसलिये तो बाबा कहते हैं चलते-फिरते खाते पीते याद में रहो। ऐसे नहीं बैठे2 देहाभिमानी हो जाओ। इनसे कोई तुम्हारे पाप नहीं कटेंगे। यह माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। यह भोग आदि की भी रस्म-रिवाज है। बाकी इनमें कुछ है नहीं। इनमें माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। यह न ज्ञान है न योग है। सा० की कोई दरकार ही नहीं। बहुतों को सा० हुये वह आज है नहीं। माया बड़ी प्रबल है। सा० को तो कब आश भी नहीं रखनी चाहिए। इसमें तो बाप को याद करना है सतोप्रधान बनने लिये। ड्रामा को भी जानते हैं यह अनादि अनादि ड्रामा बना हुआ है जो रिपीट होता रहता है। इनको भी अच्छी रीत समझना है। जो बाप डायरेक्शन देते हैं उन पर चलना है। बच्चे जानते हैं हम फिर से आये हैं राजयोग सीखने। भारत की ही बात है। यह ही तमोप्रधान बना है फिर इनको ही सतोप्रधान बनना है। बाप भी गाते हैं अन्त में सर्व की सद्गति करते हैं। यह बड़ा वन्डरफुल खेल है। अभी बाप कहते हैं मीठे—

मीठे रूहानी बच्चों अपने को आत्मा समझो। तुमको यह 84 का चक्र लगाते पूरे 5000 वर्ष हुये है। अभी फिर वापस जाना है। ऐसी बातें और कोई कह न सके। तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार निश्चय बुद्धि होते जाते हैं। यह है बेहद का पाठशाला। बच्चे जानते हैं बेहद का बाप हमको बैठ पढ़ाते हैं। वह उस्ताद, टीचर है। बहुत बड़ा उस्ताद है। बहुत प्रेम से समझाते हैं। कितनी अच्छी2 ब्राह्मणियां बड़े आराम से 6 बजे तक सोई रहती हैं। माया एकदम नाक से पकड़ लेती है। खाटिया पर बैठे रहेंगी फलानी चाय तो ले आना। जैसे नौकर बना लेते हैं। बहुत मस्ती में रहती हैं। स्टुडन्ट उन से डरते रहते हैं। यहां तो बाप कहते हैं बच्चे डरने की कोई बात नहीं। दादा मामा से भी इतना नहीं डरते हैं जितना कि ब्राह्मणियों से डरते हैं। डायरेक्ट चिट्ठी भेजने मना करती हैं। समझती हैं हमारी फलानी न लिख दे। मुरली भी सारी नहीं पढ़कर सुनाती हैं। देखते हैं कुछ हमारे प्रति सावधानी है तो वह कट कर लेते हैं। तो जरूर अन्दर रोशनी है ना। बाबा को नहीं तो मम्मा को कैसे पड़े। ब्राह्मणियां ठीक रीति पढ़ाती हैं वा नहीं। हुकुम चलाती रहती हैं2 शुरू में जब तुम भट्ठी में थे तो मम्मा बाबा भी सभी कोई सर्विस करते थे। जैसे कर्म में करेंगा, हमको देख और भी करेंगे। तो बाबा के पास रिर्ण्ठ भी बहुत आती है। बाबा थोड़ेही आंख दिखावे तो डिस सर्विस करने में देरी नहीं करते। सेन्टर को उड़ाने में देरी नहीं करे। समझते हैं यह क्या बाबा हमारी आबरू गंवाते हैं। बाप तो जानते हैं ना महारथी थोड़े सवार प्यादे नम्बरवार हैं। अच्छे2 बच्चों को भी ईज्जत लेने देरी नहीं करते हैं। बड़ा ही आराम से रहते हैं। अन्दर सोई रहती है। बाहर से कोई पूछे फलानी है तो कहेंगे नहीं। परन्तु अन्दर सोई पड़ी है। क्या2 होता रहता है बाबा समझाते हैं। सम्पूर्ण तो कोई भी नहीं बना है। कितनी डिसर्विस कर लेते हैं। नहीं तो बाप के लिये तो गायन है चाहे प्यार करो हम तेरा दरवाजा नहीं छोड़ेंगे। यहां तो थोड़ी ही बात पर रूठ पड़ते हैं। योग को बहुत कमी है। बाबा कितना बच्चों को समझाते रहते हैं परन्तु कोई भी ताकत नहीं जो लिखे। योग होगा तो लिखते वक्त भी ताकत भरेगी। बाबा कहते हैं यह अच्छी रीत सिध करो गीता का भगवान भगवान है न कि श्रीकृष्ण। मनुष्यों की बनाई हुई सुनाई हुई झूठी गीता पढ़ते2 भारत का क्या हाल हो गया है। पतित बन पड़े हैं। भगवान की सुनाई हुई गीता इस पुरुषोत्तम संगम पर भारत को हेवन, पैराडाईज बनाते हैं। इसमें डरने की कोई बात ही नहीं। कृष्ण भगवान है ही नहीं। भारत की गिरावट अथवा चढ़ना गीता पर ही है। गीता में नाम कृष्ण का डाल दिया है। जो पूरे 84 जन्म ले पतित बनते हैं तो कितना अनर्थ हो गया है। बाप आकर सभी का अर्थ समझाते हैं। बच्चों को यहां नशा चढ़ता है फिर बाहर जाने से खत्म। टाईम वेस्ट बहुत करते हैं। कभी कमाई पर यज्ञ को देखें, ऐसे ख्याल रख अपना टाईम वेस्ट न करना है। बाप तो कहते हैं तो तुम बच्चों का कल्याण करने आये हैं, तुम फिर अपना नुकसान करते हो। यज्ञ में तो जिन्होंने कल्प पहले मदद की है वह करते रहेंगे। तुम क्यों माथा मारते हो यह करें यह करें। ड्रामा में नूंध हैं जिन्होंने बीज बोया है वह अभी भी बोयेंगे। यज्ञ का तुम चिन्तन न करो। अपना कल्याण करो। अपने को मदद दो। भगवान को तुम मदद करते हो क्या। भगवान से तुम लेते हो या देते हो? यह कब ख्याल न आना चाहिए। बाप तो कहते हैं लाडले बच्चों अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। अभी तुम संगम युग पर खड़े हो। यहां कितने थोड़े मनुष्य हैं। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होंगे। सारा दिन संगम पर खड़े रहना चाहिए। बाप हमको क्या से क्या बनाते हैं। बाप का पार्ट कितना वन्डरफुल है। यूं तो परी याद की यात्रा में रहो। बहुत बच्चे टाईम वेस्ट करते रहते हैं। याद की यात्रा से ही बेड़ा पार होना है। कल्प पहले भी बच्चों को ऐसे= ऐसे समझाया था। ड्रामा रिपीट होता रहता है। उठते-बैठते सारा कल्प वृक्ष बुद्धि में याद रहे। यह है पढ़ाई। बाकी धंधा आदि भल करो। पढ़ाई के लिये टाईम निकालना है। स्वीटहोम को और स्वर्ग को याद करो। जितना याद करेंगे उतना अन्त मति सो गति हो जावेगी। बाबा कब आपके पास आये कि आये। बाप की याद में स्वास भी सुखाला हो जावेगा। ब्रह्मा नन्दनियों को भी ऐसे होता है। पर ब्रह्मा में कोई जाता नहीं। बाप कहते हैं खाओ पीओ बाप को याद करना तो है ही। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।